पी–एच.डी. प्रवेश परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम, सत्र – 2013

थियेटर का पाठ्यक्रम

1. भारतीय शास्त्रीय नाटक (इतिहास और साहित्य)

नाटक की उत्पत्ति का भारतीय दृष्टिकोण, नाट्यशास्त्र की परम्परा, अभिनय के प्रकार, प्रेक्षागृह एवं उसके प्रकार, रस एवं भाव, दशरूपक एवं अभिनय दर्पण का विशेष परिप्रेक्ष्य, नाट्यशास्त्र का अन्य शास्त्रों से संबंध, नाट्य शास्त्र तथा संस्कृत साहित्य व प्रमुख संस्कृत नाटककार (भास, कालीदास, शूद्रक, भवभूति, राजशेखर) एवं उनके नाटक।

2. आधुनिक भारतीय नाटक (इतिहास एवं साहित्य)

आधुनिक भारतीय नाटक का प्रारंभ एवं विकास, बांग्ला व मराठी रंगमंच का इतिहास एवं भारतीय रंगमंच में उसका योगदान, भारतीय रंगमंच में पारसी थियेटर का योगदान, प्रमुख नाटककार, मण्डलियाँ एवं निर्देशक, अन्य प्रादेशिक रंगमंच (कर्नाटक, केरल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, गुजरात, असम, मणिपुर का अध्ययन), भारतीय आधुनिक रंगमंच में भारतीय जन नाट्य संघ (IPTA) का योगदान व अन्य प्रमुख गैर पेशेवर नाट्य दल, रंग–संस्थाओं की भूमिका (एन.एस.डी., बी.एन.ए., एस.एन.ए. एफ.टी.आई.आई. भारत भवन–रंगमंडल आदि), प्रमुख भारतीय आधुनिक नाटककार (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, विजय तेंदुलकर, सतीश आलेकर, महेश एलकुंचवार, गिरीश कर्नाड और उनके नाटक। प्रमुख भारतीय निर्देशकों एवं अभिनेताओं का रंगकर्म (पृथ्वीराज कपूर, हबीब तनवीर, इब्राहीम अल्काजी, एम.के. रैना, के.एन. पणिक्कर, रतन थियम, ब. व. कारंत, देवेन्द्र राज अंकुर, बंसी कौल।

3. भारतीय एवं एशियन लोक रंगमंच शैलियाँ

लोक रंगमंच की उत्पत्ति, विकास, विशेषतायें, शैलियाँ एवं अवधारणाएँ, लोक रंगमंच, संस्कृत रंगमंच तथा भारतीय पारम्परिक रंगमंच और उनमें अंतः संबंध, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड का लोक रंगमंच, दक्षिण भारत का लोक रंगमंच (तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक) दक्षिण पूर्व में असम, मणिपुर, नागालैण्ड का लोक रंगमंच, पंजाब, हरियाणा, कश्मीर का लोक रंगमंच, जापान, श्रीलंका, इंडोनेशिया का लोक रंगमंच, लोक और आधुनिक रंगमंच की तुलना।

4. पाश्चात्य रंगमंच (इतिहास एवं साहित्य)

रंगमंच की उत्पत्ति की पाश्चात्य अवधारणा, काव्य शास्त्र एवं अरस्तू द्वारा निष्पादित विरेचन का सिद्धान्त, ग्रीक, रोमन, धार्मिक एवं मध्यकालीन रंगमंच, एलिजाबेथन थियेटर, शेक्सपीयर एवं समकालीन नाटककार, आधुनिक पाश्चात्य रंगमंच, पुनर्जागरण कालीन रंगमंच सोफ़ोक्लीज, यूरोपिडीज मौलियर, शेक्सपीयर, चेखव, इब्सन, ब्रेख्त, सैमुअल बैकेट, क्रिस्टोफर मार्लो, बर्नार्ड शॉ, डारियो फ़ो के नाटक।

शोध विभाग
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़ (छ.ग.) 491-881

5. नाट्य सिद्धान्त एवं शैलियाँ

भारतीय नाट्य सिद्धान्त की अवधारणा, पश्चिमी नाट्य सिद्धान्त की अवधारणा, एब्सर्ड थियेटर, फिजिकल थियेटर, पूअर थियेटर, थियेटर आफ क्रूयेलिटी, बादल सरकार के थर्ड थियेटर, नुक्कड़ रंगमंच की अवधारणा एवं योगदान, साहित्य की विभिन्न विधाओं के रंगमंचीय प्रयोग (कहानी, कविता, उपन्यास) आदि रंगमंच की विभिन्न शैलियों का अध्ययन स्टाईलाइज्ड, रियलिस्टिक, कामेडी, भरत तथा स्तानिस्लावस्की की तुलना, भरत तथा ब्रेख्त के रंगमंच की तुलना।

अंत: संबंध

6. थियेटर क्रिटीसिज्म एण्ड एप्रिसियेशन

नाट्य विश्लेषण की अवधारणा एवं उसका महत्व, रंगमंचीय दृष्टिकोण से नाटक का अध्ययन, अच्छे नाटक की विशेषतायें एवं उसका प्रभाव, नाट्य समीक्षा के सिद्धांत, वाद क्या है ? वाद की उत्पत्ति एवं विकास क्रम, रंगमंच और मीडिया के पारस्परिक संबंध, दर्शकों एवं रंगमंच का अंर्तसंबंध, रंगमंच को प्रोत्साहित करने में विभिन्न संस्थानों का योगदान, किसी भारतीय नाटक की समीक्षा, अध्ययन या प्रस्तुति का दृष्टिकोण, किसी पश्चिमी नाटक की समीक्षा, अध्ययन/प्रस्तुति के दृष्टिकोण से।

7. फ़िल्म और रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र

सौंदर्य शास्त्र का स्वरूप, कलाओं में सौंदर्य शास्त्र का प्रभाव, भारतीय सिनेमा का इतिहास एवं उसका विकास, पाश्चात्य सिनेमा का इतिहास एवं उसका विकास, रंगमंच एवं सिनेमा की तुलना, रंगमंच एवं सिनेमा का अंर्तसंबंध एवं प्रभाव, फ़िल्म अभिनय और रंगमंच के अभिनय में अंतर एवं समानता, फ़िल्म तकनीक व मंच तकनीक में अंतर तथा समानता, फ़िल्म पर बाज़ारवाद का प्रभाव, रंगमंच व अन्य कला रूपों पर बाज़ारवाद का प्रभाव।

8. छत्तीसगढ़ में रंगकर्म

छत्तीसगढ़ में रंगकर्म का इतिहास एवं उसका विकास, छत्तीसगढ़ का पारम्परिक लोक रंगमंच (दाऊमंदराजी, मदन निषाद, भुलवा राम, ठाकुर राम, फिदाबाई, गोविन्द निर्मलकर, रामचरण निर्मलकर का योगदान), छत्तीसगढ़ी लोक एवं आधुनिक रंगमंच में अंतः संबंध, हबीब तनवीर एवं सत्यदेव दुबे का रंगकर्म, छत्तीसगढ़ के प्रमुख रंगकर्मी, छत्तीसगढ़ के हिन्दी नाटककार, छत्तीसगढ़ी नाटककार।

कला संकाय विभाग
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़ (छ.ग.) 491-881

(प्रो. मृदुला शुक्ल)
विभागाध्यक्ष, थियेटर

(डॉ. योगेन्द्र चौबे)
सहायक प्राध्यापक, थियेटर